



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 143]

नई दिल्ली, बुधवार, जुलाई 7, 2004/आषाढ़ 16, 1926

No. 143]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JULY 7, 2004/ASADHA 16, 1926

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

( वाणिज्य विभाग )

( पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय )

अधिसूचना

नई दिल्ली, 7 जुलाई, 2004

जांच की शुरुआत

विषय :—चीन जनवादी गणराज्य मूल के अथवा वहां से निर्यातित रबड़ केमिकल्स ( एम बी टी, एम बी टी एस, सी बी एस और पी बी आई ) के आयात पर लगाये गये पाटनरोधी शुल्क की जांच की शुरुआत।

सं. 14/9/2004-डीजीएडी.— चूंकि मै. नेशनल आर्गेनिक केमिकल्स इंडस्ट्रीज लि. (जिसे इसके बाद एन ओ सी आई एल कहा गया है ) ने निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है ) के समक्ष 1995 में यथासंशोधित सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 और सीमा शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण ) नियमावली 1995 (जिसे इसके बाद नियमावली कहा गया है ) के अनुसार एक आवेदन दाखिल किया है जिसमें चीन जनवादी गणराज्य के मूल के अथवा वहां से निर्यातित एम बी टी, एम बी टी एस, सी बी एस और पी बी आई (जिन्हें इसके बाद सम्बद्ध वस्तु कहा गया है) नामक कुछ रबड़ केमिकल्स के पाटन का आरोप लगाया है और सम्बद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क की वसूली के लिए पाटनरोधी जांच आरम्भ करने का अनुरोध किया गया है और चूंकि प्राधिकारी ने यह पाया है कि सम्बद्ध देश की सम्बद्ध वस्तु के पाटन, घरेलू उद्योग को हुई क्षति और पाटन एवं क्षति के बीच कारणात्मक संबंध के बारे में पर्याप्त प्रथम दृष्टया साक्ष्य मौजूद हैं इसलिए प्राधिकारी जो घरेलू उद्योग को क्षति के परिणामस्वरूप, किसी आरोपित पाटन की मौजूदगी, उसकी मात्रा और प्रभाव को निर्धारित करने तथा पाटनरोधी शुल्क की ऐसी राशि की सिफारिश करने, जिसकी यदि वसूली की जाती है तो वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी, के लिए उपर्युक्त नियमावली के नियम 5 के अनुसार उक्त आरोपित पाटन की एतद्वारा जांच प्रारम्भ करते हैं।

2. विद्याराधीन उत्पाद

विद्याराधीन उत्पाद कुछ विशिष्ट रबड़ केमिकल्स हैं जिनका प्रयोग रबड़ उत्पादों के विनिर्माण में किया जाता है, अर्थात:-

(क) त्वरित्र: एम. बी. टी., एम. बी. टी. एस. एवं सी. बी. एस.

(ख) पूर्ण-वल्कनीकरण निरोधक/मंदक/झुलसन निरोधक रबड़ केमिकल्स:

पी. वी. आई. उत्पादों के रासायनिक नामों का विवरण इस प्रकार है:-

त्वरित्र रसायन

सामान्य नाम	रासायनिक विवरण	अन्य व्यापारिक नाम
एम. बी. टी.	2 मरकैप्टो बेन्जोथियाजोल	त्वरित्र एम
एम. बी. टी. एस	डिवेन्जोथियाजोल डिसल्फाइड	त्वरित्र डी एम
सी. बी. एस.	एन साइक्लोहेक्साइल-2-बेन्जोथियाजोल सल्फेनामाइड	त्वरित्र सी जेड/ त्वरित्र एच बी एस

पूर्ण-वल्कनीकरण निरोधक/मंदक रसायन

सामान्य नाम	रासायनिक विवरण	अन्य व्यापारिक नाम
पी. वी. आई	एन - (साइक्लोहेक्साइलथियो) थालिमाइड	रबड़ रसायन सी टी पी/ झुलसनरोधी एजेंट/ झुलसन निरोधक

1. एम. बी. टी. - एम. बी. टी. अभिक्रिया के दौरान उत्पन्न हुई हाइड्रोजन सल्फाइड गैस के उच्च तापमान एवं दबाव के अन्तर्गत एनीलाइन, कार्बन डिसल्फाइड और सल्फर की अभिक्रिया से उत्पन्न होती है।
2. एम. बी. टी. एस. - एम. बी. टी. एस., उपयुक्त आक्सीडाइजिंग एजेंटों का प्रयोग करते हुए एम बी टी के सोडियम लवण के आक्सीकरण द्वारा विनिर्मित होता है।
3. सी. बी. एस. - सी. बी. एस., उपयुक्त आक्सीडाइजिंग एजेंटों का प्रयोग करते हुए साइक्लोहेक्साइल अमीन, एम बी टी के सोडियम लवण की अभिक्रिया द्वारा निर्मित होता है।
4. पी. वी. आई. - पी. वी. आई., आक्सो-अल्कोहल, अल्काली अरगानो सल्फर यौगिक, अमोनिया, क्लोरीन एवं थालिक एनहाइड्रिड की एक विलायक की उपस्थिति में अभिक्रिया द्वारा निर्मित होता है।

इस उत्पाद का प्रयोग अन्य उद्योगों के अलावा मुख्य रूप से आटोमोटिव टायर एवं ट्यूब उद्योग में और कनवेयर बेल्टिंग एवं फुटवेयर उद्योग में किया जाता है।

विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र के अन्तर्गत अनेक अन्य प्रयोगों में प्रयुक्त दूसरे रबड़ केमिकल्स शामिल नहीं हैं।

ये उत्पाद सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के सी. शु. वर्गीकरण शीर्ष 38.12.10, 38.12.20 एवं 38.12.30 के साथ-साथ 29.34.20 और 29.25.20 (छः अंकीय स्तर पर) के लिये उपशीर्षों और आई टी सी एच एस वर्गीकरण के अन्तर्गत वर्गीकृत हैं। तथापि सीमाशुल्क और आई टी सी एच एस वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और वे किसी भी तरह मौजूदा जांच के क्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं हैं।

### 3. घरेलू उद्योग और आधार

यह आवेदन मै. नेशनल आर्गनिक केमिकल्स इंडस्ट्रीज लि. मुम्बई द्वारा दायर किया गया है। प्राधिकारी ने, एन ओ सी आई एल द्वारा दायर आवेदन के समर्थन और विरोध में, उक्त उत्पादों के दूसरे ज्ञात उत्पादकों की राय मांगी थी। प्राप्त उत्तरों के आधार पर प्राधिकारी ने अलग-अलग उत्पादों के बारे में उक्त नियमावली के नियम 5 के अनुसार आवेदक की आधार संबंधी अपेक्षा की जांच की है और उनका यह मत है कि आवेदक का शामिल उत्पादों के घरेलू उत्पादन में एक बड़ा हिस्सा बनता है और इसलिए वह उपर्युक्त नियमावली के नियम 5 (3) (क) के अनुसार याचिका दायर करने के लिए घरेलू उद्योग के रूप में आधार संबंधी मानदण्ड को पूरा करते हैं।

### 4. समान वस्तुएं

आवेदक ने दावा किया है कि आवेदन में शामिल हर उत्पाद अलग-अलग है और वह दूसरे रबड़ रसायनों के साथ अन्तर प्रतिस्थापनीय नहीं हैं। ये विशिष्ट रसायन हैं जो अलग-अलग प्रकार के रबड़ उत्पादों के निर्माण में विशिष्ट रूप से प्रयोग किए जाते हैं और दूसरे रसायनों के साथ प्रतिस्थापनीय नहीं हैं यद्यपि ये सामान्य तौर पर त्वरित एवं निरोधक के रूप में जाने जाते हैं। इसके अलावा मौजूदा आवेदन में शामिल रबड़ रसायन भी अन्तर प्रतिस्थापनीय अथवा एक दूसरे के समान उत्पाद नहीं हैं क्योंकि ये सामग्री विशिष्ट अन्तिम प्रयोगों के लिए इस्तेमाल की जाती है।

ये अलग-अलग उत्पाद सम्पूर्ण विश्व में अपने रसायन और अपने व्यापारिक नामों से जाने जाते हैं और उनके द्वारा विनिर्मित उत्पाद एवं आयातित उत्पाद में कोई अन्तर नहीं है। इसलिए पाटन मार्जिन और घरेलू उद्योग को क्षति सहित सभी अन्य वर्गीकरण अलग-अलग उत्पादों के संबंध में किए जाएंगे। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पादों और सम्बद्ध देश से आयातित उत्पादों में कोई भिन्नता नहीं है। टायर उद्योग एवं व्यापारियों द्वारा दूसरे उद्योगों को आपूर्ति के लिए इन उत्पादों का सीधे आयात किया जा रहा है। उपभोक्ता घरेलू और समान आयातित उत्पाद का एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग कर रहे हैं।

घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और सम्बद्ध देश से आयातित उत्पाद सभी प्रमुख विशेषताओं के अनुसार समान हैं और इसलिए वे नियमानुसार उक्त पद के अर्थ के भीतर समान वस्तुएं हैं।

#### 5. सामान्य मूल्य

आवेदक ने दावा किया है कि चीन गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है और उसे 10.11.2003 की सी.शु. अधिसूचना सं. 101/2003 के तहत यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैराग्राफ 7 और 8 के अनुसार अनुमान के खंडन के अधीन नियमानुसार ऐसा ही माना जाना चाहिए।

गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के दावे को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने यथासंशोधित उक्त नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 और 8 के अनुसार सम्बद्ध वस्तुओं की विनिर्माण लागत के आधार पर परिकलित सामान्य मूल्य पर विचार किया है।

#### 6. निर्यात कीमत

अलग-अलग उत्पादों की निर्यात कीमत का अनुमान डीजीसीआईएंडएस तथा अन्य गौण स्रोतों से एकत्र किए गए आंकड़ों के आधार पर लगाया गया है। कारखाना द्वारा निर्यात कीमत निकालने के लिए समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा, कमीशन, निर्यात के देश में आंतरिक परिवहन, पत्तन हैंडलिंग और पत्तन प्रभारों के कारण समायोजन किए गए हैं।

#### 7. पाटन मार्जिन

इस बात का पर्याप्त साक्ष्य है कि सम्बद्ध देशों में सम्बद्ध वस्तु का सामान्य मूल्य निवल निर्यात कीमत से काफी अधिक है जिससे प्रथम दृष्ट्या यह पता चलता है कि सम्बद्ध देश के निर्यातकों द्वारा भारतीय बाजार में सम्बद्ध वस्तु का पाटन किया जा रहा है।

#### 8. क्षति एवं कारणात्मक संबंध

याचिकाकर्ताओं ने अलग-अलग उत्पादों के लिए क्षति से सम्बन्धित विभिन्न मापदण्डों के बारे में अलग-अलग सूचना प्रस्तुत की है। आयातों की मात्रा में समग्र रूप से और उत्पादों की मांग के संबंध में वृद्धि, बाजार हिस्से की हानि, कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास, निवेशों पर कम आय, लाभप्रदता एवं सम्बद्ध वस्तु के विनिर्माण में नकदी की हानि जैसे मापदण्डों से संचयी एवं सामूहिक रूप से प्रथम दृष्ट्या यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को पाटन के कारण वास्तविक क्षति हुई है।

#### 9. प्रक्रिया

क) शामिल देश : वर्तमान जांच में शामिल देश चीन जनवादी गणराज्य है।

ख) जांच अवधि : वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ जांच अवधि 01.01.2003 से 31.12.2003 तक की है। तथापि, क्षति संबंधी जांच की अवधि में 2000-01 से 2002-03 की अवधि और जांच अवधि शामिल है।

ग) सूचना प्रस्तुत करना : सम्बद्ध देश के निर्यातकों, भारत स्थित उनके दूतावास के जरिए उनकी सरकारों, भारत में सम्बन्धित समझे जाने वाले आयातकों और नियोक्ताओं तथा घरेलू उद्योग से अनुरोध किया जाता है कि वे निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से संगत सूचना प्रस्तुत करें और अपने विचारों से निम्नलिखित को अवगत कराएँ :

निर्दिष्ट प्राधिकारी  
पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय,  
वाणिज्य विभाग,  
उद्योग भवन,  
नई दिल्ली- 110011

कोई अन्य हितबद्ध पार्टी भी नीचे निर्धारित समय सीमा के भीतर निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से जांच से संगत अपने अनुरोध कर सकती है।

#### घ) समय सीमा

वर्तमान जांच से सम्बन्धित कोई सूचना लिखित में भेजी जानी चाहिए जो इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से चालीस (40) दिनों से पूर्व उपयुक्त पते पर प्राधिकारी के पास पहुँच जाए। तथापि, जिन ज्ञात निर्यातकों और आयातकों को अलग से लिखा जा रहा है उन्हें उक्त सूचना, उन्हें लिखे गए पत्र की तारीख से (40) चालीस दिनों के भीतर प्रस्तुत करनी होगी।

#### ड.) सार्वजनिक फाइल का निरीक्षण

नियम 6(7) के अनुसार कोई हितबद्ध पार्टी उस सार्वजनिक फाइल का निरीक्षण कर सकती है जिसमें अन्य हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्य के अगोपनीय अंश रखे गए हैं। यदि कोई हितबद्ध पार्टी आवश्यक सूचना जुटाने से मना करती है अथवा उसे उचित अवधि के भीतर अन्यथा उपलब्ध नहीं कराती है अथवा जांच में अत्यधिक बाधा डालती है तो प्राधिकारी अपने पास उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अपने जांच परिणाम दर्ज कर सकते हैं और केन्द्र सरकार को यथोचित सिफारिशें कर सकते हैं।

अभिहित सेनगुप्त, अपर सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

2092 GI/04

**MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**  
(Department of Commerce)  
(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

**NOTIFICATION**

New Delhi, the 7th July, 2004

**Initiation**

**Subject : Initiation of anti-dumping duty imposed on imports of Certain Rubber Chemicals (MBT, MBTS, CBS and PVI) originating in or exported from China PR.**

No. 14/9/2004-DGAD.— **WHEREAS** M/s National Organic Chemicals Industries Ltd. (herein after referred to as NOCIL) has filed an application before the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (herein after referred as Rules), alleging dumping of Certain Rubber Chemicals namely MBT, MBTS, CBS and PVI (herein after referred to as subject goods), originating in or exported from People Republic of China (herein after referred to as China PR) and requested for initiation of Anti Dumping investigations for levy of anti dumping duties on the subject goods.

AND WHEREAS, the Authority finds that sufficient prima facie evidence of dumping of the subject goods from the subject country, injury to the domestic industry and causal links between the dumping and injury exist, the Authority hereby initiates an investigation into the alleged dumping, and consequent injury to the domestic industry in terms of the Rules 5 of the said Rules, to determine the existence, degree and effect of any alleged dumping and to recommend the amount of antidumping duty, which if levied would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

## **2. Products under consideration**

The products under consideration are certain specific rubber chemicals used in manufacture of rubber products, namely:

- A Accelerators: **MBT, MBTS, and CBS**  
 B Pre-vulcanization inhibitors/ retarder/ scorch inhibitor rubber chemical: **PVI**

Detailed chemical names of the products are as follows:-

**Accelerators chemicals**

Generic Name	Chemical description	Other trade names
MBT	2-Mercapto Benzothiazole	Accelerator M,
MBTS	Dibenzothiazole disulphide	Accelerator DM
CBS	N-cyclohexyl-2-benzothiazole sulphenamide	Accelerator CZ/ Accelerator HBS

**Pre vulcanization inhibitor/retarder chemical**

Generic Name	Chemical Description	Other trade names
PVI	N-(Cyclohexylthio)phthalimide	Rubber Chemical CTP Anti scorching Agent Scorch inhibitor

1. **MBT** - MBT is produced by reacting aniline, carbon disulphide and sulphur under high temperature and pressure of Hydrogen Sulphide gas formed during the reaction.
2. **MBTS** - MBTS is manufactured by oxidation of sodium salt of MBT using suitable oxidizing agents.
3. **CBS** -- CBS is manufactured by reacting the sodium salt of MBT, Cyclohexyl amine using suitable oxidizing agents.
4. **PVI** -- PVI is manufactured by reacting an oxo-alcohol, Alkali, Organo sulphur compound, ammonia, chlorine and phthalic anhydride in presence of a solvent. It is a multi-stage reaction process.

The products are mainly used in automotive tyre and tubes industry and also in conveyor belting and footwear industry amongst others.

Other rubber chemicals used in various other uses are not covered within scope of the product under consideration.

The products are classified under various subheadings of customs classification heads 38.12.10, 38.12.20 and 38.12.30 as well as under 29.34.20 and 29.25.20 (at six digit levels) of the Customs Tariff Act and ITC HS classification. The

Customs and ITC HS classifications are however, indicative only are in no way binding on the scope of the present investigation.

### **3. Domestic industry and Standing**

The application has been filed by M/s National Organic Chemicals Industries Ltd., Mumbai. The Authority called for the opinion of the other known producers of the products involved in terms of their support and opposition to the application filed by NOCIL. On the basis of the response received Authority has examined the standing requirement of the applicant in terms of the Rule 5 of the said Rules against individual products and is of the opinion that the applicant commands major proportion of domestic production of the products involved and therefore, satisfy the criteria of standing as domestic industry to file the petition in terms of Rule 5(3) (a) of the Rules supra.

### **4. Like articles**

The applicant has claimed that each individual product included in the application is a stand-alone product and does not have inter se substitutability with other rubber chemicals. These are specific chemicals used in specific recipe used for manufacture of different types of rubber products and cannot be substituted for other chemicals though they are generally known as accelerators and inhibitors. Moreover, the rubber chemicals included in the present application are also not inter se substitutable or inter se like products as these materials are used for specific end applications. Therefore, dumping margins and all other analysis, including injury to the domestic industry will be done on individual products.

These individual products are known by their chemical, as well as trade names world-over and there is no difference between the product manufactured by them and the import products. There is no difference in the products produced by the domestic industry and imported from subject country. The products are being directly imported by the tyre industry and also by traders for supply to other industries. The consumers are using the domestic and corresponding import products interchangeably.

The products produced by the domestic industry and imported from subject country are identical in all essential characteristics and therefore, like articles within the meaning of the term as per the Rules.

### **5. Normal values**

The applicant has claimed that China is a non-market economy country and should be treated so in terms of the Rules subject to rebuttal of presumption in terms Paragraph 7 and 8 of Annexure I of the AD Rules as amended vide Customs Notification No. 101/2003 dated 10.11.2003



In view of the Non-market economy claim the Authority has prima facie considered the Constructed Normal Value based on cost of manufacturing the subject goods in terms of Para 7 & 8 of the Annexure 1 to the said Rules as amended.

## 6. Export prices

The export prices of individual products have been estimated on the basis of data collected from DGCI&S and other secondary sources. Adjustments on account of ocean freight, marine insurance, commission, inland transportation in the country of export, port handling and port charges have been made to arrive at the Export Price at ex-factory level.

## 7. Dumping margins

There is sufficient evidence that Normal Values of the subject goods in the subject countries are significantly higher than the net export prices indicating prima-facie that the subject goods are being dumped in the Indian market by exporters from the subject country.

## 8. Injury and causal link

Petitioners have furnished information on various parameters relating to injury on account of individual products separately. Parameters, such as increase in volume of imports both in absolute terms and in relation to the demand of the products, loss in market share, price under-cutting, price under-selling, Price depression, low return on investments, profitability and cash loss in the manufacturing of subject goods, prima-facie indicate, collectively and cumulatively, that the Domestic Industry has suffered material injury on account of dumping.

## 9. Procedure

- a) **Countries involved** The country involved in the present investigation is the People Republic of China.
- b) **Period of investigation (POI)** : The period of investigation (POI) for the purpose of present investigation is 1.1.2003 to 31.12.2003. The injury investigation period will however, cover the period 2000-01 to 2002-03 and the POI.
- c) **Submission of information** : The exporters in the subject country, their governments through their embassy in India, the importers and users in India known to be concerned and the domestic industry are requested to submit

2072 GS/04

relevant information in the form and manner prescribed and to make their views known to the:

**The Designated Authority**  
**Directorate General of Anti-Dumping and Allied Duties**  
**Department of Commerce**  
**Udyog Bhavan**  
**New Delhi-110011.**

Any other interested party may also make its submissions relevant to the investigation in the prescribed form and manner within the time limit set out below.

**d) Time limit**

Any information relating to the present investigation should be sent in writing so as to reach the Authority at the address mentioned above not later than **forty (40) days** from the date of publication of this notification. The known exporters and importers, who are being addressed separately, are however, required to submit the information within **(40) forty days** from the date of the letter addressed to them.

**e) Inspection of public file**

In terms of Rule 6(7), any interested party may inspect the public file containing non-confidential version of the evidence submitted by other interested parties. In case where an interested party refuses access to, or otherwise does not provide necessary information within a reasonable period, or significantly impedes the investigation, the Authority may record its findings on the basis of the facts available to it and make such recommendations to the Central Government as deemed fit.

ABHIJIT SENGUPTA, Addl. Secy. & Designated Authority